International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-02-2021, Accepted: 23-03-2021, Published: 30-04-2021
www.socialsciencejournal.in
Volume 7; Issue 2; 2021; Page No. 84-88

जय प्रकाश नारायण के विचारों का दर्शन

अमरनाथ वर्मा
सहायक आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग, सेठ नन्द किशोर पटवारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश
आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारों से महात्मा गांधी और विनोबा भावे के बाद जयप्रकाश नारायण का नाम आता है। जनता ने अपने इस लोकप्रिय नेता को लोकनायक की उपाधि से सम्मानित किया जयप्रकाश नारायण जीवन भर भारत की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था में रूपान्तर के लिए नये–नये प्रयोग करने का प्रयास करते रहे। इसलिए उनकी विचार–यात्रा एक सीधी रेखा की तरह नहीं रही। उनकी विचार यात्रा तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित रही। उन्होंने तत्कालीन भारत की राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक व्यवस्थाओं में गाँधीवादी मूल्यों व नैतिक मान्यताओं को लाने का प्रयास किया वे अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में समाजवादी रहे। उन्होंने भारतीय राजनीति एवं समाज में समाजवाद के अनेक प्रयोग करे। वे भारतीय राजनीति को बुराइयों से मुक्त करके पुनः संरचना (RE CONSTRUCTION) करना चाहते थे। वे राजनीतिक व्यवस्था की शक्ति की राजनीति, सत्ता लोलुपता की राजनीति हिंसा की राजनीति को लोकसत्ता और लोकनीति पर आधारित करना चाहते थे। उनका मानना था कि सत्ता एवं शक्ति का पिरामिड अपने सिर के बल खड़ा है जिसमें सत्ता व शक्ति नीचे के स्तर पर कम है और ऊपर के स्तर पर अधिक है। जयप्रकाश नारायण उसे सीधा खड़ा करना चाहते थे जिसमें नीचे के स्तर पर सत्ता और शक्ति अधिक हो और ऊपर के स्तर पर सत्ता व शक्ति कम हो।

मूल शब्दः समाजवाद, लोकतांत्रिक, मार्क्सवादी, लोकतंत्र, गाँधीवादी, विचारधारा

प्रस्तावना
प्रत्येक विचारक अपने समय और परिस्थितियों का शिशु होता है उसी प्रकार जयप्रकाश नारायण के विचारों और कार्यों पर भन्न परिस्थितियों, विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। जयप्रकाश नारायण ने अपनी विचारधारा एक मार्क्सवादी विचारक के में आरम्भ की परन्तु भारतीय परिस्थितियों के लिए लोकतांत्रिक समाजवाद को उचित समझा गाँधी की मृत्यु के बाद गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित हुए जीवन के अन्तिम चरण में सम्पूर्ण क्रान्ति और विश्व समाज जैसी अवधारणाओं का विकास किया जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर, 1902 को बिहार के एक गाँव सिताव दयारा (जिला–सारंग) में हुआ था उनके पिता का नाम हरसूलदयाल और माता का नाम फूलरानी देवी था। हरमूल दयाल नहर विभाग में सरकारी अधिकारी थे एवं सादगी स्वभाव के संस्कारवान और राष्ट्रवादी विचारों के व्यक्ति थे। फूलरानी देवी सरल स्वभाव की धार्मिक प्रवृति की घरेलु महिला थी।

शोध अध्ययन के उदेद्श्य
1. जयप्रकाश नारायण के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. जयप्रकाश नारायण के समाजवाद विचारधारा का अध्ययन करना।
3. सम्पूर्ण क्रान्ति और विश्व समाज की अवधारणा का अध्ययन करना।
4. जयप्रकाश नारायण के विचारों का विश्लेषण करना।

शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण
जयप्रकाश नारायण के विचारों का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। आंकडों को विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि से इकट्ठा किया गया है।

जयप्रकाश नारायण के विचार
जयप्रकाश नारायण के विचार तत्कालीन सम एवं परिस्थितियों से प्रभावित थे। कभी सीधी रेखा की तरह विचार एक समान नहीं रहे। उन्होंने अपने जीवन का आरम्भ एक साम्यवादी के रूप में किया परन्तु साम्यवादी विचारधारा से गुजरते हुए लोकतांत्रिक समाजवादी, गाँधीवादी और सर्वादयवादी विचारधारा एवं सम्पूर्ण क्रान्ति प्रवर्तक के रूप में उन्होंने अपना जीवन पूरा किया।

समाजवादी विचार
समाजवादी विचार समाजवाद के बहुत से रूप है गिल्ड समाजवाद, श्रेणी समाजवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद यूटोपियन, फेबियन, राज्य समाजवाद विकासवादी समाजवाद एवं वैज्ञानिक समाजवाद। जिनके अलग–अलग रूप और अलग–अलग विचार है। सी.ई.एम.ओ का कहना है कि समाजवाद उस टोप की तरह है जिसे व्यक्तियों ने पहना है जिससे उसका स्वरूप ही नष्ट हो गया है। जयप्रकाश नारायण भारतीय समाज के प्रमुख नेता प्रचारक और है। महात्मा गांधी उन्हें समाजवाद का सबसे बड़ा विद्वान मानते थे। वे समाजवाद को सामाजिक–आर्थिक पुनर्निर्माण का एक सम्पूर्ण सिद्धान्त मानते थे। समाजवाद व्यापक नियोजन सिद्धान्त तथा कार्यप्रणाली है।
उसका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज का सामंजस्यपूर्ण तथा सन्तुलित विकास है। समाजवाद के सम्बन्ध में उनके विचार निरन्तर परिवर्तनशील रहे। उन्होंने समाजवादी विचार की मार्क्सवादी समाजवाद से प्रारम्भ की उसका भारतीय परिस्थितियों के अनुसार संशोधन और किया। इस परिवर्तन की निरन्तर प्रक्रिया में उन्होंने मार्क्सवाद से लोकतांत्रिक समाजवाद व सर्वादय के रूप में गाँधीवादी समाजवाद तक की चिन्तन यात्रा पूरी की इस प्रकार स्पष्ट है जयप्रकाश नारायण के समाजवादी चिन्तन की यात्रा को तीन खण्डों में विभाजित करके देखा जा सकता है।
- मार्क्सवादी समाजवाद
- मार्क्सवाद के प्रति मोह भंग व असहमति
- लोकतांत्रिक समाजवाद
- गाँधीवादी समाजवाद या सर्वादय

जयप्रकाश नारायण के विचारों पर मार्क्सवादी समाजवाद पर मार्क्सवाद का गंभीर प्रभाव था। उन्हें समाजवाद की प्रेरणा

कार्लमार्क्स से मिली और मार्क्सवाद में उनकी अटूट निष्ठा रही क्योंकि जयप्रकाश नारायण ने मार्क्सवादको ही समाजवाद का वास्तविक रूप माना था। कार्लमार्क्स को आधुनिक समाजवाद का जनक माना जाता है। मार्क्सवादी समाजवाद को उन्होंने न्याय पर सामाजिक निर्माण का पूर्ण सिद्धान्त माना। उन्होंने के सिद्धान्त–द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या, वर्ग संघर्ष की धारणा, मूल्य का सिद्धान्त निजी सम्पत्ति का अन्त या सम्पति का समाजीकरण की धारणा का समर्थन किया। 1934 में उन्होंने भारतीय कांग्रेस समाजवाद दल की स्थापना की। मार्क्सवादी सिद्धान्तों को साकार रूप देने के लिए समाजवादी दल की नीतियों और कार्यक्रम में सिद्धान्त शामिल कियें।

1. उत्पादक जनता को सत्ता का हस्तान्तरण।
2. देश के आर्थिक जीवन का राज्य द्वारा नियोजित एवं नियंत्रित।
3. उत्पादन वितरण एवं विनिमय के सभी साधनों के समाजीकरण दृष्टि से आधारभूत एवं प्रमुख उद्योगों (जैसे इस्पात कपास पटसन, रेलवे नौवहन, बागवान और खदान, बैंक, बीमा एवं सार्वजनिक सेवाओं का समाजीकरण)।
4. विदेशी व्यापार पर राजकीय एकाधिकार की स्थापना।
5. आर्थिक जीवन के समाजीकृत क्षेत्र में उत्पादन, वितरण एवं ऋण सम्बन्धी सहकारी समितियों का संगठन।
6. राजाओं और जमीदारों तथा अन्य सभी शोषक वर्गों का बिना क्षतिपूर्ति उन्मूलन।
7. किसानों के बीच भूमि का वितरण।
8. राज्य द्वारा सहकारी एवं सामूहिक कृषि को प्रोत्साहित करना।
9. किसानों और मजदूरों द्वारा लिए गये ऋणों की समाप्ति।
10. श्रम करने या पोषण पाने के अधिकार को राज्य द्वारा मान्यता देना।
11. आवश्यकता के अनुसार दाम और योग्यता के अनुसार काम के पर अन्ततः आर्थिक वस्तुओं का वितरण और उत्पादन।
12. व्यावसायिक आधार पर वयस्क मताधिकार
13. राज्य द्वारा किसी धर्म को समर्थन नहीं देना, विभिन्न धर्मों के बीच भेदभाव नहीं करना और न जाति या सम्प्रदाय के आधार पर किसी भेदभाव को मानना।
14. राज्य द्वारा स्त्री पुरुष के बीच भेदभाव नहीं करना।
15. भारत के तथाकथित सार्वजनिक ऋण की अस्वीकृति।

मार्क्सवाद के प्रति मोह–भंग व असहमति

1940 में जयप्रकाश नारायण को मार्क्सवाद की पुन समीक्षा करने की आवश्यकता महसूस हुई। उन्होंनें राष्ट्रीय और मानवीय आधारों पर मार्क्सवाद की आलोचना की क्योंकि सोवियत संघ में स्टालिन ने जिस साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना की उसका आधार राजनीतिक आर्थिक का केन्द्रीकरण, नौकरशाही तथा हिंसात्मक कार्यवाही थी। इस स्थिति में वर्ग विहीन एवं राज्यविहीन समाज की स्थापना के लक्ष्य को प्राप्त करना असम्भव हो गया जिसकी कल्पना की थी भारतीय साम्यवादी दल अपनी नीति निर्धारण के मामले में स्वतंत्र नहीं था अपितु यह तत्कालीन साम्यवादी विश्व के नेता स्टालिन के हाथों की कठपुतली मात्र था। जयप्रकाश नारायण साम्यवादी दल के आचरण एवं व्यावहारिक पक्ष के असन्तुष्ट इसलिए उन्होंने समाजवाद को भारत के लिए उपयोगी नहीं माना।

लोकतांत्रिक समाजवाद

1940 के जाते–जाते जयप्रकाश नारायण का मार्क्सवादी समाजवाद के प्रति मोह भंग हो गया, लेकिन समाजवाद में उनका विश्वास बना रहा। उन्होंने समाजवाद को भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार संशोधित करने का प्रयास किया। समाजवाद एक ऐसा जीवन दर्शन है जो स्वतन्त्रता, समानता और न्याय जैसे विवेकपूर्ण नैतिक मूल्यों पर आधारित है। जयप्रकाश नारायण का मानना है कि लोकतंत्र और समाजवाद एक दूसरे के पूरक है। लोकतंत्र के बिना समाजवाद का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। अतः इस समाजवाद की अवधारणा में आर्थिक और राजनीतिक लोकतंत्र की धारणा है। इस प्रकार के समाजवाद में मानव न तो पूँजी का दास है और न किसी पार्टी का न किसी राज्य का दास है मानव का स्वतन्त्र अस्तित्व है। लोकतांत्रिक समाजवाद शान्तिपूर्ण और धीरे–धीरे विकास में विश्वास रखता है लोकतंत्र और समाजवादी सहगामी है। जयप्रकाश नारायण के अनुसार समाजवाद की स्थापना लोकतंत्र और शान्तिपूर्ण साधनों के माध्यम से ही सम्भव है लोकतांत्रिक स्वतन्त्रताओं के अभाव में समाजवाद जीवित नहीं रह सकता। लोकतांत्रिक समाज में ही मानव की स्वतंत्रता, अवसरों की समानता और प्रत्येक नागरिक को अपने व्यक्तित्व के विकास के पूर्ण अवसर मिलेंगे।

गाँधीवादी समाजवाद या सर्वादय

जयप्रकाश नारायण ने चिन्तन की विकास यात्रा में अनुभव किया कि वास्तविक समाजवाद की स्थापना हिंसा की शक्ति या राज्य की वैधानिक के माध्यम से सम्भव नहीं है। समाजवाद को तीसरी शक्ति (लोकशक्ति) जाग्रत करके ही लाया जा सकता है। 1948 में महात्मा गाँधी की मृत्यु के बाद जयप्रकाश नारायण के चिन्तन में पुनः करने का आत्म अवलोकन की प्रक्रिया शुरू हुईझे विनोबा भावे जिन्हें महात्मा गाँधी का उत्तराधिकारी माना जाता है) के द्वारा संचालित भूदान यज्ञ आन्दोलन ने जयप्रकाश नारायण चिन्तन का अत्यधिक प्रभावित किया। प्रथम ऐशियाई समाजवादी सम्मेलन रंगून में जयप्रकाश नारायण ने कहा था कि गाँधी के प्रेम और शान्ति के रास्ते से ही समाजवाद लाया जा सकता है। समाजवाद हमेशा ही मेरे लिए जीवन जीने की कला है। 1957 में उनका दलीय राजनीति के प्रति अविश्वास बढ़ा और राज्य के समाजवाद की जगह जनता के समाजवाद पर विचार करने लगे। गाँधीवादी समाजवाद का उद्देश्य व्यक्ति और समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन करना रूपान्तरण करना है। समाज के नैतिक मूल्यों को शामिल करना चाहते थे। लोकशक्ति का विकास करके समाज में सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन करना चाहते थे।

राजनीतिक विचार

प्रकाश नारायण व्यक्ति की स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं। इसके लिए शासन व्यवस्था को उचित मानते हैं। जयप्रकाश नारायण की लोकतन्त्र की धारणा एक नैतिक लोकतंत्र की धारणा है। वर्तमान समय में लोकतंत्र की समस्या नैतिक मूल्य की समस्या है। लोकतंत्र के लिए संविधान शासन प्रणाली राजनीतिक दलों एवं निर्वाचन इत्यादि सभी का अपना महत्व है। परन्तु जब तक नागरिकों में नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास नहीं हो जाता, तब तक कोई संविधान शासन प्रणाली को सफल नहीं कर सकती। वर्तमान लोकतंत्र में दलबन्दी सम्बन्धी सम्बन्धी झगड़े, स्वार्थों की राजनीति, दलों की आन्तरिक अनुशासनहीनता अवसरवादिता गठबंधन, भ्रष्टाचार और घूसखोरी का साम्राज्य है। स्वतंत्रता के बाद भारत में राजनीतिक स्वतोमल गयी लेकिन जन की की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ उसका स्वरूप शासक बदल गये हैं। पुराने दिनों की भांति आज भी जनता की पराधीनता है आम जनता के लिए कोई किसी प्रकार का स्वराज्य नहीं आया। लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि जनता नैतिकता का पालन करे क्योंकि नैतिकता और लोकतंत्र एक दूसरे के पूरक है। नैतिकता के अभाव में कत का सफल क्रियान्वयन होना असम्भव है।

पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र के सम्बन्ध में जयप्रकाश नारायण के विचार

जयप्रकाश नारायण के अनुसार स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्वता, सहयोग परोपकार सेवा इत्यादि नैतिक मूल्य लोकतंत्र की

आधारशिला है पश्चिमी लोकतंत्र में इन सभी मूल्यों का अभाव है। जयप्रकाश नारायण ने पश्चिमी लोकतंत्र की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की है–

1. पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र में नैतिक मूल्यों का अभाव है।
2. पश्चिमी संसदीय लोकतंत्र का एक मूलभूत दोष यह है कि इसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत भूमिका पर बल दिया गया है।
3. जयप्रकाश नारायण के अनुसार राज्य व्यक्तियों का गणितीय योग नहीं है।
4. संसदीय लोकतंत्र में शासन अल्पमत का शासन होता है क्योंकि निर्वाचन में समस्त प्रत्याशियों में से सबसे अधिक मत पाने वाले प्रत्याशी को विजयी घोषित कर दिया जाता है भले ही वह बहुमत का प्रतिनिधित्व नहीं करता हो। कई बार बहुत कम मतदाताओं का प्रतिनिधि बन कर रहता है इसलिए अल्पमत का शासन होता है।
5. लोकतंत्र की धारणा के अनुसार सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना चाहिये परन्तु व्यवहार में सत्ता का केन्द्रीकरण दिखायी देता है। इस केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति के कारण सत्ता पर जनता का कोई प्रभावशाली नियन्त्रण नहीं रहता है केन्द्रीकरण लोकतंत्र की धारणा केसत्ता का केन्द्रीकरण दिखायी देता है इस केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति के कारण सत्ता पर जनता का कोई प्रभावशाली नियन्त्रण नहीं रहता है। केन्द्रीकरण लोकतंत्र की धारणा के विपरीत है।
6. सिद्धान्तः यह माना जाता है कि राजनीतिक दलों का गठन राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए करते हैं किन्तु व्यवहार में प्रत्येक दल सत्ता की राजनीति करता है। चुनाव होने पर जनता का प्रतिनिधि बनने के बजाय यह दल का प्रतिनिधि बन जाता है और वह दलीय नियंत्रण और अनुशासन के अधीन कार्य करता है। इस दलीय व्यवस्था के कारण वह न (जनता का प्रतिनिधि) स्वामी बना जाता है और स्वामी (जनता) पीछे चलने वाली सेवक बन जाती है। जनता की भागीदारी नाममात्र की रह जाती है। दल राज्य के भीतर एक राज्य का रूप ले लेते हैं जिन पर जनता का कोई नियंत्रण नहीं होता है।
7. जसंसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली के अत्यधिक खर्चीली होने के कारण साधनहीन, सुयोग्य व्यक्ति जनता का प्रतिनिधि नहीं बन सकता इसलिए लोकतंत्र वर्ग या बड़े–बड़े संगठनों व दबाव समूहों के हाथों से बंधक बन जाता है। चुनाव को राजनीतिक रूप से जागरुक करने के बजाय सार्वजनिक रूप से नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन करते हैं। उपरोक्त आधारों पर जयप्रकाश नारायण ने पश्चिमी संसदीय लोकतंत्र की आलोचना की है।

जयप्रकाश नारायण की लोकतंत्र की अवधारणा

जयप्रकाश नारायण की लोकतंत्र सम्बन्धी धारणा एवं नैतिक धारणा है जिसे उन्होंने सर्वादयी लोकतंत्र या लोक स्वराज्य कहा है। जिसे अनेक नाम दिये हैं जैसे– सहगामी लोकतंत्र, दलविहीन लोकतंत्र, सावयवी लोकतंत्र, समुदायवादी लोकतंत्र आदि।

सामुदायिक लोकतन्त्र में सत्ता के विकेन्द्रीकरण की संरचना

जयप्रकाश नारायण ने सत्ता के विकेन्द्रीकरण की ग्राम स्तर से लेकर राष्ट्र स्तर तक पाँच स्तरीय योजना प्रस्तुत की है।

1. **ग्राम–स्तरः** ग्राम सभा सामुदायिक लोकतन्त्र की आधारभूत इकाई होगी। जिसे ग्राम से सम्बन्धित सभी विषयों पर अन्तिम निर्णय लेने का अधिकार होगा तथा कार्यपालिका के रूप में ग्राम पंचायत को चुनने का अधिकार होगा।

2. **क्षेत्रीय स्तरः** इस स्तर पर पंचायत समिति प्रमुख संस्था होगी। जिसका चुनाव उस क्षेत्र की ग्राम पंचायतों के सदस्यों के द्वारा किया जायेगा

3. **जिला–स्तरः** जिला स्तर पर जिला परिषद् होगी। जिला परिषद का गठन उस क्षेत्र में आने वाली पंचायत समिति के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा होगा।

4. **प्रान्तीय–स्तरः** किसी प्रान्त में स्थित जिला समुदायों से प्रान्तीय सभा का गठन होगा। प्रान्तीय स्तर पर कार्यपालिका शक्तियों का प्रयोग प्रान्तीय सभा द्वारा गठित समितियों द्वारा सामूहिक रूप से किया जाएगा।

5. **राष्ट्रीय स्तरः** सामुदायिक लोकतन्त्र के राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय सभा होगी। राष्ट्रीय सभा के प्रतिनिधियों का निर्वाचन प्रान्तीय सभाओं के सदस्यों के दवारा किया जायेगा। राष्ट्रीय सभा अपनी कार्यपालिका की नियुक्ति करेगी जो उसके प्रति उत्तरदायी होगी।

इस प्रकार के सहभागी लोकतन्त्र में सत्ता का बहाव नीचे से ऊपर की चलेगा, न कि ऊपर से नीचे की ओर जयप्रकाश नारायण का सहभागी लोकतन्त्र स्वःशासित, स्वः पर्याप्त कृषि औद्योगिक ग्रामीण व्यवस्था पर आधारित है। जिसमें जनता की समितियों बनाकर काम करना चाहिए। लोक समितियों के कार्यों पर महत्व देते हुए जयप्रकाश ने कहा था कि एक लोकतन्त्र की सफलता के लिए समितियों का होना आवश्यक है।

1. लोक समितियाँ जनता और अपने प्रतिनिधियों के बीच कड़ी का काम करेगी। जनता का यह कर्तव्य है कि वह देखे कि निर्वाचित प्रतिनिधि अपने कर्तव्यों पालन निष्ठा एवं ईमानदारी से कर रहे हैं।
2. जनशक्ति को अन्याय के प्रति संगठित एवं विकसित करें।
3. दलित और शोषित वर्ग के हितों की रक्षा करे और जाति, वर्गों के से राजनीति को मुक्त रखें।
4. ग्राम स्तर की जनसमितियों का कार्य लोकतन्त्रीय संस्थाओं को परामर्श और उनका मार्गदर्शन करना है।

जयप्रकाश नारायण ने कहा राजनीतिक लोगों और लोकसभा तथा विधान सभा के हाथों से कार्यों को छीनकर इन्हें वापस लोगों को सौंपने का काम हमारा उद्देश्य है। जयप्रकाश नारायण ने सन 1977 में जनता सरकार की स्थापना बाद उन्होंने देश के प्रत्येक गाँव में जनता की समितियों बनाने की अपील की इनका विश्वास कि नागरिक अधिक से अधिक कार्य करे और सरकार के कार्यों पर नियंत्रण रखे। जो कि लोकतन्त्र की आधारशिला है। इस प्रकार लोक समिति अपने प्रतिनिधियों के कार्यों की निगरानी, एक प्रहरी की तरह कार्य करेगी। लोक समितियों द्वारा लोगों का विश्वास प्राप्त किया जायेगा रचनात्मक कार्यो में जनता की साझेदारी बढ़ाये और उन्हें अहिंसक कार्यवाही का प्रशिक्षण देना समितियों का काम है। ये समितियों आम जनता के द्वारा चुनी जानी चाहिए। लोक समितियों द्वारा ये सब काम होंगे तभी गाँव की जनता समझेगी कि स्वराज्य का सच्चा सुख गरीब के घर भी पहुंच रहा है।
जयप्रकाश नारायण व्यक्ति का सन्तुलित एवं समन्वित विकास करना चाहते हैं। वे वर्ग विहीन, जाति–विहीन, दल–विहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे। उनका राजनीतिक पार्टियों में कोई विश्वास नहीं था क्योंकि उनका मानना है कि ये सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट कर देती है जयप्रकाश नारायण आशावादी है। उनका सहभागी लोकतंत्र का विश्वास, जनता को स्वशासित होने की क्षमता पर आधारित हैं। उन्होंने कहा है कि में प्रशासन की कार्यवाही पर जनता द्वारा निगरानी रखना, न केवल अधिकार बल्कि उनका कर्तव्य भी है। इस समिति में लोक प्रतिनिधि अपने को जनता का स्वामी नहीं वरन जनता सेवक समझेंगे।

जयप्रकाश नारायण ने यह माना है कि राजनीतिक विकेन्द्रीकरण आर्थिक विकेन्द्रीकरण के बिना प्रभावहीन ही है, बेकार है। उनके सामुदायिक लोकतन्त्र में अर्थव्यस्था सहयोगी और सहभागी होगी। वे एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था बनाना चाहते हैं, कृषि और उद्योग में सन्तुलन रहेगा अतः अर्थव्यवस्था का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है न कि व्यक्तिगत लाभ कमाना। लोकतन्त्रको भ्रष्ट होने से रोकने के लिए जयप्रकाश ने निम्नलिखित सुझाव दिये हैं

1. काम धन्धे एवं संख्या के अनुसार व्यावसायिक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था हो।
2. सशक्त विरोधी दल का विकास हो।
3. निर्वाचन का सम्पूर्ण व्यय सरकार को वहन करना चाहिए।
4. व्यापारिक प्रतिष्ठानो समितियों से धन लेने की अपेक्षा दलों की सदस्यता शुल्क पर निर्भर रहना चाहिए। निर्वाचनों का राष्ट्रीयकरण।
5. चलते फिरते मतदान केन्द्र की व्यवस्था की जाय।
6. ग्राम पंचायतों को प्रमुख इकाई माना जाय उनमें सभी निर्णय सर्वसम्मत ढंग से होने चाहिए। ग्राम पंचायत ब्लाक पंचायतों के सदस्यों को चुने। उनके सदस्य जिला पंचायती एवं जिला पंचायत राज्यों के विधान मण्डलों को चुनने एवं केन्द्रीय विधान मण्डल को चुने। निर्वाचन पद्धति के स्थान पर जनगणना पद्धति का प्रारम्भ हो।
7. विकेन्द्रीकरण राजनीतिक एवं आर्थिक दोनों क्षेत्रों में होना चाहिए।

सम्पूर्ण क्रान्ति की अवधारणा

देश की सम्पूर्ण व्यवस्था संरचना को बदलने के लिए अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति का आहवान किया। उन्होंने इस क्रान्ति का वाहक युवा, जाग्रत शैक्षिक एवं बौद्धिक वर्ग को बनाया। इस क्रान्ति में रचनात्मक कार्यक्रम और विघटनात्मक या कार्यक्रमों में एक अनुपम अद्वितीय समन्वय देखने को मिलता है। उस समय देश शासन एवं प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, महगाई, बेरोजगारी, शासन में उभरती हुई अधिनायकवादी प्रवृत्तियां एवं सामाजिक जीवन में असमानता, अन्याय और समस्त सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक बुराइयों को समाप्त कर वे एक न्यायपूर्ण संतुलित, समतावादी और जागरुक समाज गठन करना चाहते थे। पहली स्वतंत्रता की लड़ाई राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने लड़ी और दूसरी स्वतंत्रता व नागरिक अधिकारों की लड़ाई जयप्रकाश नारायण ने लड़ी। पहली स्वतंत्रता की लड़ाई में भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति दिलायी और दूसरी लड़ाई भी उसी की तरह महत्वपूर्ण है। इसने भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के लिये आवाज उठाई और गृह शासकों की तानाशाही से मुक्ति दिलायी जो कि कई तरह से ब्रिटिश साम्राज्य की तानाशाही से बुरी थी। गाँधीजी ने भारत को ब्रिटिश साम्राज्य की अधिनायकता से मुक्ति दिलायी जबकि जयप्रकाश नारायण जो कि भारत के दूसरे मुक्ति दाता है, राष्ट्र को घरेलू निरंकुशता से मुक्ति दिलायी। उन्होंने शान्तिपूर्ण तरीके से भारत में एक स्वतंत्र समाज और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को स्थापित करने का प्रयास किया।

विश्व समाज की अवधारणा

जय प्रकाश नारायण विश्व समाज के सिद्धान्त को आदर्श मानते थे। उनका मानना था कि संगठित सैनिकवाद और समग्रवादी व्यवस्थाओं ने जो विनाश का ताण्डव मचा रखा है उसके मुकाबले में विश्व समाज ही एशिया तथा अफ्रीका की दलित मानवता के साथ न्याय कर सकता है तत्कालीन समय में विश्व में शीतयुद्ध अपनी चरम सीमा पर था सम्पूर्ण विश्व दो शक्ति गुटों में बढ़ा हुआ था। प्रत्येक गुट अपनी सर्वाच्चता सिद्ध करने में लगे हुए थे। शक्ति की राजनीति व कूटनीति की पूजा हो रही थी, उसे व्यवहार में भी लाया जा रहा था, उस राजनीति में आदर्श और सिद्धान्त की कोई जगह नहीं थी। जय प्रकाश नारायण का मानना था कि इस संकट की घड़ी में सम्पूर्ण दायित्व बुद्धिजीवी है उसे विश्व समाज (जय जगत) की भावनाओं का प्रसार करना चाहिए। आज विश्वको शक्ति राजनीति का सामना करने के लिए एक मानसिक कारित लोक विकास करने की आवश्यकता है जिससे सम्पूर्ण विश्व को भय और से बचाया जा सके।

विचारों का मूल्यांकन

जयप्रकाश नारायण के अनुसार समाजवाद में व्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वप्रथम है। लोकतांत्रिक समाजवाद में लोकतांत्रिक साधन, शान्तिपूर्ण तकनीक और रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा ही अपने उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है। उन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता और आर्थिक समानता के मध्य विवेकसम्मत सन्तुलन स्थापित करना महत्वपूर्ण माना जयप्रकाश नारायण का मानना है कि राष्ट्रीयकृत उद्योगों के प्रबन्ध में कार्मिकों और सामूहिक कृषि के प्रबन्धन में किसानों की भागीदारी होनी चाहिए। जिससे राजनीतिक एवं आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए। भारत भारत में समाजवाद की स्थापनापूर्ण तरीके से ही सम्भव हो सकती है। उन्होंने समाजवाद की स्थापना के लिए राज्य को एक साधन उपकरण के रूप में माना और राज्य के पर लोकतांत्रिक साधनों के माध्यम से नियंत्रण किया जाना चाहिए। लोकतांत्रिक समाजवाद भारत की स्थितियों के अनुकूल था। भारत को स्वतंत्र कराने के लिए अहिंसक एवं लोकतांत्रिक तरीके अपनाये जा रहे थे। इन परिस्थितियों में भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से ही समाजवाद की स्थापना को अच्छा माना।

इस प्रकार के समाजवाद का उद्देश्य वर्गविहीन, शोषणविहीन एवं एक समतावादी समाज की स्थापना करना था। जिससे समाज के सभी सदस्यों में स्वतंत्रता, समानता भाई–चारे की भावना विकसित हो सके। गांधीवादी समाजवाद की प्रतियोगिता प्रतिद्वन्दता के लिए कोई स्थान नहीं है। समाज के वर्गों में संघर्ष के स्थान पर पूर्ण सहयोग और सामंजस्य ही इस समाजवाद में पवित्र साध्य के अनुरूप साधनों के उपयोग को अनिवार्य मानता है। समाजवाद के इस पसायीक शक्ति के साधन को अपनाता है जो अहिंसा, करुणा प्रेम पर आधारित है। जिसे जयप्रकाश नारायण ने लोक शक्ति की संज्ञा दी है। जयप्रकाश नारायण के चिन्तन में गांधी एवं विनोबा भावे के विचारों का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है।

जयप्रकाश नारायण ने कहा राजनीतिक लोगों और लोकसभा तथा विधान सभा हाथों से कामों को छीनकर इन्हें वापस लोगों को सौंपने का काम हमारा उद्देश्य है। जयप्रकाश नारायण से 1977 में जनता सरकार की स्थापना बाद उन्होंने देश के प्रत्येक गाँव में जनता की समितिया बनाने की अपील की इनका विश्वास था कि नागरिक अधिक से अधिक कार्य करें और सरकार के कार्यों पर नियंत्रण रखें। जो कि लोकतंत्र की आधारशिला है।

निष्कर्ष

जयप्रकाश नारायण राजनीतिक शक्ति का पूरी तरह विकेन्द्रीकरण करना चाहते हैं। राजनीतिक विकेन्द्रीकरण की मूल इकाई गाँव है। सबसे अधिक काम, शक्ति, सत्ता के नीचे स्तर पर होगी और सबसे कम काम, शक्ति सत्ता ऊपर पर होगी। उनका सहभागी लोकतन्त्र, सावयव लोकतन्त्र या सामुदायिक लोकतन्त्र एक सर्वादय कार्यक्रम है। इसमें मानव के लिए शक्ति और समृद्धता है यदि हम आपनी आवश्यकताओं को कम कर दें, तो समानता स्वतंत्रता और भातृत्व से एक साथ रह सकते हैं। जीवन में एक अनुशासन जरूरी है। जब मानव अपने व्यवहार को नियमित नियन्त्रित शासित करने में सक्षम हो जायेगा तब किसी बाहरी सत्ता का उस पर कोई नियंत्रण नहीं रहेगा। सभी जगह राज्य के शासन की जगह लोगों का शासन राज्य के कानून की जगह जनता का कानून राज्य की शक्ति की

जगह जनता की शक्ति है। अर्थात् राजनीति की जगह लोकनीति और राज्य शक्ति की जगह लोक शक्ति का विकास होगा। इसलिए जयप्रकाश नारायण राजनीति का विकल्प, लोकनीति या तीसरी शक्ति का विकास करना चाहते हैं। इस प्रकार की वैकल्पिक शक्ति स्वाभाविक रूप से हिंसा शक्ति की विरोधी होगी एवं दण्ड शक्ति से भिन्न होगी। इसीलिए इसको स्वावलम्बी नैतिक शक्ति या तीसरी शक्ति मानते हैं। लोकनीति और लोकशक्ति के बिना राजनीतिक व्यवस्था व सामाजिक परिवर्तन निरर्थक हो जायेंगे। लोगों का सामाजिक, मानसिक, नैतिक, बौद्धिक, राजनीतिक व समाज में सामाजिक न्याय, समानता, स्वतंत्रता के लिए लोक शक्ति आवश्यक है जिससे वर्ग–हीन राज्य–हीन व्यवस्था की स्थापना हो सकती है। यह हिंसा शक्ति और शक्ति से सम्भव नहीं है।

जयप्रकाश नारायण लोकतात्रिक मूल्यों स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व की भावना न्याय के पक्षधर थे। सन 1975 में आपातकाल के समय सम्पूर्ण क्रान्ति का आहवान इन लोकतांत्रिक मूल्यों को पोषित करने का प्रयास किया स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व की भावना न्याय इत्यादि मूल्यों का व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिए। स्वतंत्रता मेरे लिए आकाशदीप के समान है जो सबसे ऊपर है। जयप्रकाश नारायण इस प्रकार जीवन भर चिन्तन करते रहे।

संदर्भ सूची

1. दाधीच, नरेशः समसामयिक राजनीतिक सिद्धान्त, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स्, 2015
2. गुप्ता, रूपक दत्तः ग्लोबल पॉलिटिक्स, प्रथम संस्करण, पियर्शन इण्डिया, 2019
3. नारायण जयप्रकाशः समाजवाद, सर्वादय और लोकतंत्र, बिहार हिन्दी अकादमी, पटना 1973
4. वर्मा, वी.पी.: दि पोलिटिकल फिलोसोफी ऑफ महात्मा गांधी एण्ड सर्वादय, लक्ष्मीनारायण आगरा, 1959
5. वर्मा, वी.पी.: मॉडर्न इंडियन पॉलिटिकल लक्ष्मीनारायण, आगरा 1967
6. गुप्ता, आर. सी.: सोशियलिज्म, डमोक्रेसी एण्ड इंडिया, रामप्रसाद एण्ड संस आगरा, 1965
7. राधाकिशनः भारतीय राजनीतिक विचारक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, वर्धमान महावीर खुला विश्वेविद्यालय, कोटा, 2012
8. धरमचंद जैन कैलाश दरोगा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर